महाकवि कालिदास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालें ? पेज-1

कुछ भारतीय विद्वानों का मत है कि ई० पू० प्रथम शतक में उज्जैन में विक्रमादित्य नामका राजा राज्य करता था। वह बड़ा प्रतापी था, उसने शकों को पराजित किया था। उसकी सभा में विद्वानों का अत्यधिक समादर था। संभव है महाकवि कालिदास के आश्रयदाता यही विक्रमादित्य रहे हों क्योंकि अनेक वरत्नों में कालिदास का भी उल्लेख है -

धन्वन्तरिक्षपणकामरसिंह शङ्कु
वेतालभट्ट घटकर्पर कालिदासाः।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां
रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य॥

इस कल्पना के अनुसार कालिदास का काल ई० पू० प्रथम शतक है। पाश्चात्य आलोचक इस मान्यता को नहीं स्वीकार करते हैं, वे महाकवि को गुप्तकाल में ही किसी न किसी राजा का समकालीन मानते हैं। उनका कहना है कि कालिदास द्वारा प्रयुक्त प्राकृत, भाषा तथा उनके काव्यों में चित्रित समाज महाकवि के गुप्तकालीन होने का समर्थन करते हैं।

कालिदास ने अपने नाटक 'मालविकाग्निमित्रम्' में अग्निमित्र को नायक बनाया है। अग्निमित्र पुष्यमित्र शुंग का पुत्र था। पुष्यमित्र का समय ई० पू० द्वितीय शतक माना जाता है, यह कालिदास के समय की उपरितम सीमा है। महाकवि बाणभट्ट ने कालिदास का स्मरण बड़े आदर के साथ किया है -

निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते॥

बाण का समय सप्तम शताब्दी का पूर्वार्द्ध माना गया है यह कालिदास के समय की निम्नतम सीमा है। इन्हीं दोनों सीमाओं के बीच अर्थात ई० पू० प्रथम शतक से लेकर ई० अ० सप्तम शतक के बीच में किसी -

समय महाकवि कालिदास रहे होंगे। पेज2

महाकवि कालिदास ने दो महाकाव्यों - रघुवंशम् एवं कुमारसम्भवम्, दो खण्डकाव्यों - मेघदूतम् जिसे आधुनिक विद्वान् गीतिकाव्य भी कहते हैं तथा ऋतुसंहार, एवम् तीन नाटकों - मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्, अभिज्ञान-शाकुन्तलम् का प्रणयन किया है। भारतवर्ष ही क्या संसार का कोई भी महाकवि कालिदास की-तुलना नहीं कर सकता। कालिदास ने अपने - काव्यों में प्रकृति एवं मानव के बीच अभेदो-पस्थापन किया है। भाषा, छन्द, एवं शैली तथा अलंकार, कालिदास के काव्यों में प्रवहमान् - दिखाई पड़ते हैं। महाकवि उपमा अलंकार के - कविसम्राट् माने जाते हैं —

"उपमाकालिदासस्य"। इतना ही नहीं अवान्तर संस्कृत-साहित्य कालिदास की प्रशंसापरक सूक्तियों से - भरा पड़ा है —

पुराकवीनां गणना प्रसंगे कनिष्ठिकाऽधिष्ठित कालिदासः।
अद्याऽपि तत्तुल्य कवेरभावद् नामिका सार्थवती बभूव।

कालिदास भारतीय प्रतिभा के एक - उज्वल उदाहरण हैं। उनकी कृतियों की निखिल - विश्व में प्रतिष्ठा है और संसार के सर्वश्रेष्ठ - कवियों तथा नाटककारों में उनका अप्रतिम - स्थान है। उन्होंने अपने महाकाव्यों, नाटकों तथा मेघदूत और ऋतुसंहार जैसे लघुकाव्यों में जो अनुपम सौन्दर्य भर दिया है, उसकी तुलना - संस्कृत साहित्य में अन्यत्र दुर्लभ है। लोकप्रियता की दृष्टि से भी कालिदास अद्वितीय है। उनकी - रचनाएँ विशिष्ट विद्वान् और साधारण पढ़े लिखे दोनों को समान रूप से प्रिय है। उनकी अन-वद्य रचनाओं का आस्वादन जहाँ पण्डितमूर्धन्य करते हैं वहीं संस्कृत का आरम्भ करनेवाले -

Scanned with CamScanner

छात्र भी उनकी सरल, सरस रचनाओं का आनन्द ले सकते हैं। एक प्रकार से यह कहा जा सकता है कि संस्कृत साहित्य का अध्ययन कालिदास की रचनाओं से ही होता है। महाकवि की रचनाएँ संस्कृत साहित्य की सर्वश्रेष्ठ निधि हैं। उनके कारण ही इतना समस्त संसार में उस समय भी आदर हुआ जब कि हमारा देश परतन्त्र तथा हेय था। कालिदास और उनकी रचनाओं के बिना विशाल संस्कृत वाङ्मय की महिमा अत्यन्त हेय हो जायेगी। पाश्चात्य विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से कालिदास की प्रशंसा की है। जर्मनी के प्रसिद्ध कवि गेटे ने कालिदास और उनकी कृति 'अभिज्ञान शाकुन्तल' के सम्बन्ध में अपने पद्य में जो कुछ कहा है उसी से यह ज्ञात हो जाता है कि संसार के सुप्रसिद्ध कवियों में कालिदास की ख्याति है। गेटे के पद्य का सारांश यह है —

"हे मित्र यदि तुम वासन्ती युवावस्था के मनोरम पुष्प और ग्रीष्मतुल्य प्रौढ़ावस्था के उत्तमोत्तम फल और अन्य ऐसी आत्मा को प्रभावित करने वाली श्रेष्ठ सामग्रियाँ एक ही स्थल पर ढूँढ़ना चाहते हो तो कालिदास की शकुन्तला पढ़ो। उसमें पहुँचकर न केवल तुम्हारी आत्मा ही सन्तुष्ट और ~~प्रसन्न~~ तृप्त होगी प्रत्युत तुम्हें स्वर्ग और मर्त्यलोक की सकल समृद्धियाँ भी यहीं एक ही जगह मिल जायेंगी।"

कालिदास का प्रकृति प्रेम विश्व विश्रुत है। यों तो महाकवि की समस्त रचनाओं में प्रकृति के जीवन से मानव जीवन को प्रेरणा और उद्बोधन प्राप्त होने का सन्देश मिलता है किन्तु उनका अभिज्ञान शाकुन्तल तो जैसे प्रकृति के साथ मानवीय सम्बन्धों की एक सुन्दर चित्रशाला है। प्रकृति के साथ मनुष्य के मधुर सम्बन्धों की जो मनोहर छटा अभिज्ञान शाकुन्तल में दिखाई पड़ती है, उसकी तुलना अन्यत्र दुर्लभ है।

कालिदास की प्रसाद गुणमयी, ललित-

पदावली विमंडित, परिष्कृत शैली, उनकी वैदर्भी रीति के सर्वथा अनुरूप है उसी प्रकार उनकी सुकुमार कल्पना भी मधुर एवं निगूढ भावों की अभिव्यञ्जना में पूर्ण समर्थ है। रस तो जैसे उनके दास थे। यद्यपि अलंकार उनकी सूक्ष्म ममज्ञता के अनुगामी थे तथापि इनमें उपमा उनकी प्रियतमा थी। अनुप्रास अनायास ही उनकी पदावली के पीछे-पीछे आगे आते थे। स्वभावोक्ति उनकी रससिद्ध लेखनी में अपने आप उतरकर नाचने लगती थी और उनके उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त तथा अर्थान्तरन्यास भी अपनी अनुपम छटा से आज भी सुरभारती के सहस्रों श्लोकों को पण्डित जनों का कण्ठहार बनाये हुए हैं।

कालिदास की कल्पना का चमत्कार उनकी कृतियों में सर्वत्र मुखर है। वे मानव हृदय के कोमल भावनाओं के ही चित्रकार नहीं थे प्रत्युत उसकी उत्सुकता, विह्वलता, क्रोध, अमर्ष, आक्रोश, आवेश आदि मानसिक विचारों के भी प्रवीण द्रष्टा थे। जैसे बाह्य जगत में कोई गूढ से गूढ प्रसंग भी उनसे अप्रकट नहीं रह सकता था वैसे ही अन्तर्जगत में भी उनकी सर्वत्र गति थी। शृंगार की विभिन्न भावनाओं के तो वे सर्वश्रेष्ठ चित्रकार थे यही कारण है कि उनके नायक और नायिकाएँ ही नहीं उनके समस्त पुरुष और स्त्री पात्र भी अपने ढंग में अद्वितीय बन पड़े हैं। कालिदास को कविकुलगुरु की उपाधि देने वाले पीयूष-वर्षी कविवर जयदेव ने बहुत कुछ सोच समझ-बूझकर ही इस महनीय उपाधि का सदुपयोग किया है। संभवतः जयदेव ने आदि कवि वाल्मीकि और व्यास को देव अथवा ऋषि कवि की कोटी में रखकर के मानव कवियों में कालिदास के यह सर्वश्रेष्ठ पद प्रदान किया है, जो उनके लिए सर्वथा समीचीन है।

Scanned with CamScanner